License Information

Study Notes - Book Intros (Tyndale) (Hindi) is based on: Tyndale Open Study Notes, Tyndale House Publishers, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes - Book Intros (Tyndale)

नहूम

कोई भी आसन्न विपत्ति के मार्ग में होना पसंद नहीं करता, और न ही शत्रु आक्रमण का खतरा एक सुखद विचार है। क्या परमेश्वर ऐसी परिस्थितियों में रक्षा कर सकते हैं? क्या परमेश्वर दुष्ट आक्रमणकारियों का न्याय करेंगे? नहूम का उत्तर स्पष्ट रूप से हाँ है। नहूम की भविष्यवाणी हमें आश्वस्त करती है कि परमेश्वर अभी भी पृथ्वी के इतिहास को नियंत्रित करते हैं। उनका संदेश अत्याचारियों के लिए चेतावनी और पीड़ितों के लिए सांत्वना है।

संदर्भ

नहूम के समय में, यहूदा का राज्य एक महान महाशक्ति, अश्शूरी साम्राज्य द्वारा ग्रसित होने के खतरे में था। नीनवे, राजधानी से, महान राजा अश्शूरबनिपाल (668–626 ई.पू.) ने अश्शूरी शक्ति को उसकी चरम सीमा तक पहुँचाया। इसकी सैन्य शक्ति और सांस्कृतिक प्रभाव प्राचीन पश्चिमी एशिया की लंबाई और चौड़ाई में फैला हुआ था। यहाँ तक कि प्राचीन शहर थेबेस भी उसके विजयी कदमों तले कुचल चुका था (3:8–10)।

ये परिस्थितियाँ नहूम और यहूदा के लोगों के लिए कम उत्साहजनक थीं। इस्राएल, उनका उत्तरी सम्बन्धी राज्य, पहले ही 722 ई.पू. में अश्शूरियों के हाथों गिर चुका था, और अब यहूदा उसी साम्राज्यवादी शत्रु का सामना कर रहा था। स्थिति तो और भी खराब हो गई जब, अश्शूरबनीपाल ने हाल ही में यहूदा के राजा, दुष्ट मनश्शे (697–642 ई.पू.), को पकड़ लिया था और बाबेल ले गया (2 इति 33:10–11)। बँधुआई से मुक्त होने के बाद, पश्चातापी मनश्शे (2 इति 33:12–17) ने अपनी पूर्व दुष्टता को मिटाने का प्रयास किया (2 रा 21:1–18; 2 इति 33:1–9)। उसके प्रयासों के बावजूद, उनकी पूर्व दुष्ट प्रभाव अभी भी भूमि में व्याप्त था। परमेश्वर के लोगों पर विनाश की छाया छाई हुई थी। ऐसे में, नहूम के नीनवे के पतन और यहूदा के भविष्य के लिए आशा के भविष्यवाणी संदेश समयोचित थे।

नहूम के समय में अश्शूर के पतन के बीज पहले से ही बोए जा चुके थे। राजा अश्शूरबनिपाल ने जब पश्चिम में शत्रुओं के एक मजबूत गठबंधन को पीछे धकेलने दिया और अपने भाई की सिंहासन की चुनौती का सामना किया, तो उसने खुद को साहित्यिक और कलात्मक गतिविधियों में व्यस्त कर लिया। राज्य के परिस्थितियों में गिरावट आई, और अश्शूर धीरे-धीरे कमजोर होता गया। अश्शूरबनिपाल की मृत्यु (626 ई.पू.) के बाद, अश्शूर के महान शहरों में से एक के बाद एक विदेशी आक्रमणकारियों के हाथों गिरने लगे। फिर अकल्पनीय हुआ—नीनवे स्वयं 612 ई.पू. में गिर गया, जैसा कि नहूम ने भविष्यवाणी की थी।

नहूम

सारांश

नहूम अपनी भविष्यवाणी की शुरुआत परमेश्वर की शक्ति को दो प्रभावशाली काव्यात्मक अंशों में दर्शाते हैं, 1:2–6 और 1:7–11। ये कविताएँ परमेश्वर के अधिपत्य न्याय को दुष्टता के विरुद्ध और उनकी भलाई को उन लोगों की ओर दर्शाती हैं जो उन पर भरोसा रखते हैं। आरंभिक वचन यह आश्वासन देता हैं कि परमेश्वर अपना न्याय निष्पक्ष रूप से करेंगे।

नहूम फिर समझाते हैं कि इतिहास के प्रवाह में परमेश्वर के सार्वभौमिक न्याय का क्या अर्थ है (1:12–15)। कोई भी देश इतना महान नहीं है कि वह अपने दुष्ट कार्यों के लिए भुगतान से बच सके, और परमेश्वर उन लोगों की दुर्दशा से अवगत हैं जो उत्पीड़ित हैं। भविष्यद्वक्ता यहूदा के लोगों को आश्वस्त करते हैं कि वे जल्द ही बदले हुए हालात का अनुभव करेंगे। शांति और स्थिरता लौट आएगी, और परमेश्वर के लोग परमेश्वर की अबाधित आराधना का आनन्द ले सकेंगे।

यहूदा में सामान्य परिस्थितियों की वापसी और नीनवे की घेराबंदी की भविष्यवाणी करने के बाद (2:1–2), नहूम अश्शूरी राजधानी के पतन का दो जीवंत चित्रण प्रस्तुत करते हैं (2:3–10; 3:1–7)। इन दोनों विवरणों के बीच, नहूम एक संक्षिप्त, व्यंग्यात्मक गीत में नीनवे के विनाश पर विचार करते हैं। तीखे व्यंग्य के साथ, वह घमंडी नीनवे के लोभ को समाप्त करने के परमेश्वर के इरादे की घोषणा करते हैं (2:11–13)।

नहूम अपने दूसरे वर्णन में नीनवे के पतन को शहर के एक और व्यंग्य के माध्यम से आगे बढ़ाता हैं। नीनवे मिस्र की राजधानी, थेबेस (3:8–13) से अधिक सुरक्षित नहीं होगी, जिसे अश्शूर ने नष्ट कर दिया था। नहूम अपनी भविष्यवाणी को एक और व्यंग्य के टुकड़े के साथ समाप्त करते हैं (3:14–19)।

नीनवे की स्थिति की निराशा को महसूस करते हुए, वह शहर के नागरिकों का मजाक उड़ाते हैं और उन्हें निर्देश देते हैं कि वे अपनी रक्षा के लिए सभी संसाधनों का आह्वान करें। निश्चित रूप से, इससे कोई लाभ नहीं होगा। नीनवे घातक रूप से घायल हो जाएगा, और उसकी मृत्यु पर सहायता करने या शोक मनाने वाला कोई नहीं होगा।

लेखक

उनकी रचनाओं से जो थोड़ा बहुत जाना जा सकता है, उसके अलावा, इस छोटे भविष्यवक्ता नहूम के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। इब्रानी पाठ में, उन्हें "नहूम एल्कोशवासी" के रूप में पहचाना गया है (1:1)। एल्कोश उनका कुल नाम हो सकता है, लेकिन अधिक संभावना है कि यह उनका गृहनगर था, जो शायद दक्षिण-पश्चिम यहूदा में स्थित था। पुस्तक के विवरण से पता चलता है कि वे नीनवे शहर से भली-भांति परिचित थे।

तिथि

नहूम ने थेबेस के पतन (663 ई.पू.; 3:10) का उल्लेख किया है और नीनवे के पतन की भविष्यवाणी की है, जो 612 ई.पू. में हुआ था। इसलिए, नहूम ने ये भविष्यवाणियाँ 663 और 612 ई.पू. के बीच कहीं की थीं। इन वर्षों के अंतराल में उसने कब ऐसा किया, इस पर मतभेद है। यह संभवतः मनश्शे के शासनकाल के अंतिम वर्षों में (लगभग 648–645 ई.पू.) हुआ, शायद अश्शूरी कैद से रिहा होने के बाद मनश्शे के सुधार प्रयासों के दौरान (2 इति 33:12–16)। या यह बाद में, धर्मी राजा योशियाह के शासनकाल के प्रारंभिक या मध्य शासनकाल के दौरान (640–609 ई.पू.) हुआ हो सकता है।

नहूम

अर्थ और संदेश

कोई भी साम्राज्य, चाहे कितना भी महान क्यों न हो, परमेश्वर की दृष्टि से परे नहीं है। जल्दी या देर से, सभी को यहोवा के सामने अपने कार्यों का हिसाब देना होगा। परमेश्वर के धार्मिक और संप्रभु न्याय की वास्तविकता नीनवे और अश्शूर के पूर्वानुमानित न्याय में निहित है। वे पृथ्वी पर सभी और हर चीज़ पर नियंत्रण रखते हैं, और वे उन सभी के लिए चिंता करते हैं जो पीड़ित हैं, चाहे युद्ध की भयावहता और अत्याचारों से हो या किसी अन्य उत्पीड़न से। एक बोझिल मानवजाति आश्वस्त हो सकती है कि ईश्वरीय न्याय अंततः विजयी होगा।

परमेश्वर धैर्यवान हैं (1:3), और उनके लोगों को भी धैर्य रखना चाहिए। इस बात का आश्वासन कि यह अच्छा और देखभाल करने वाले यहोवा (1:7) अपने लोगों के लिए एक विशिष्ट उद्देश्य रखते हैं (2:2), उन्हें विश्वास और भरोसे का जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करता है। पुस्तक के डरावने स्वर के परे आशा की अच्छी खबर है (1:15)। भविष्यद्वक्ता एक आने वाले दिन की भविष्यवाणी करते हैं जब परमेश्वर के लोग फिर से अद्भुत शांति और आनद में उनकी आराधना करेंगे। वे अंततः उन लोगों से मुक्त हो जाएंगे जो उनकी स्वतंत्रता छीनना चाहते हैं।

पवित्रशास्त्र के बाद के लेखकों ने नहूम की शुभ समाचार में मसीह के शुभ समाचार का एक प्रतिज्ञा पाया (रोम 10:15; देखें यश 52:7), जो पाप से छुटकारा पाने का अवसर प्रदान करता है। यह जानकर कि अविश्वासी एक और भी बड़े विनाश का सामना करते हैं जो गिरे हुए नीनवे से भी अधिक है, यह प्रेरणा देता है कि मसीह के माध्यम से उद्धार और अनन्त जीवन की शुभ समाचार को एक मरते हुए संसार तक पहुँचाया जाए।